EURASIAN JOURNAL OF LITERATURE AND LANGUAGES ISSN(o): 2584-1734
International Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal
Volume - 1, Issue - 1, December - 2023

DOIs:10.2023/EJLL/202301004 --:-- Research Paper / Article / Review

'स्वातन्त्र्य-गाथा' में प्रदत्त आजादी के सन्देश की उपयुक्तता

डॉ. विदुषी आमेटा
सहायक प्रोफेसर - हिंदी, साहित्य विभाग, कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय, बिहार, भारत
Email - vidusheeameta@gmail.com

शोध सारांश : "राष्ट्रं नः क्षीयमाणं तु, दर्शं दर्शं हि हृद्-व्यथा" देश को क्षीण होता देख-देख कर मेरे हृदय में बहुत बड़ी व्यथा है और "स्वर्थिनो राष्ट्र-शत्रवः" स्वार्थी लोग राष्ट्र के शत्रु बने हुए हैं, इसलिए ही 'स्वातन्त्र्य-गाथा' का पुनः स्मरण किया जा रहा है। प्रश्न इतना ही है कि क्या हम गुलामी की ओर बड़ रहें हैं? 'स्वातन्त्र्य-गाथा' भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के हुतात्मा वीर केसरी सपूतों के जीवन पर आधारित यह एक खण्डकाव्य है। तथा भारतीय वीर योद्धाओं को समर्पित किया गया है। कवि हो या आम व्यक्ति हर एक व्यक्ति स्वतन्त्र रहना चाहता है, अब संकट इस स्वतन्त्रता को कैसे बचाया जाये? स्वराज्य प्राप्ति हो या स्वराष्ट्र प्राप्ति हो, बात और संकट केवल प्राप्ति के पश्चात् रक्षा-रक्षण का ही हैं। आज "येषु रक्षण-भारोऽस्ति, त एव भक्षणे रताः" की स्थिति हैं। आज युवा पीढ़ी को कई वीर योद्धाओं के बलिदान के बाद जो आजादी मिली है, उसको संभालना भी है और समझाना भी। ऐसी कृतियाँ ही बलिदान और वीरगति को प्राप्त क्रांतिकारियों की हमें पुनरपि-पुनरपि स्मरण करती-कराती हैं।

उद्देश्य : आजादी के महोत्सव से ज्ञात उत्सवोत्सव में बह न जाना तथा स्वातन्त्र्य-गाथा में वर्णित वीर योद्धाओं की गाथाओं का स्मरण करवाने के साथ कठोर तपस्या से प्राप्त आजादी को समझ-समझाना एवं "राष्ट्र-सेवा-परायणाः" देश सेवा में संलग्न होना ही इस लघुलेख का प्रधान प्रयोजन है। वर्त्तमान परिदृश्य में हमारें ऊपर भविष्य की गुलामी के जो बादल दिखाई दे रहें है, उसके लिए आगाह करने और वीर-वीरता, आजाद-आजादी, देश-देशभक्ति, स्वतन्त्र-परतन्त्र, राष्ट्रहिताहित, स्वराष्ट्रधर्म जैसे शब्दों के मायने समझेने का प्रयास ही इसलेख का उद्देश्य है।

1. विषय-प्रवेश :

संसार के सारे विकास-विस्तार का एक ही भाव है, वीरता। जिस वीर रस में स्थायी भाव उत्साह दिखाई देता है, वही उत्साह इस सृष्टि के विकासशील होने का एक एहसास भी करता-कराता है। जगत के विस्तारक होने का कारक-कारण भाव रूप में भी वही उत्साह दिखाई देता है। वीरता उत्साह के अभाव में कायर-कमजोर सी पड़ जाती है, तथा इस वीरता के अभाव में मानव जीवन शून्य सा प्रतीत होता है। इस वीरता को धार्य-धारण करने वाले वीर पुरुषों की गाथाओं को आचार्य ओम प्रकाश पाण्डेय ने अपनी कृति 'स्वातन्त्र्य-गाथा' में वर्णित किया है। आचार्य ने स्वतंत्रता सेनानियों का जिनका नाम भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षर में दर्ज हैं, उनको को पुनः स्मरण करते हुए आजादी की क्या कीमत होती है, उसका बखान-बयान किया है। जिन स्वतंत्रता सेनानियों का आचार्य ने अपनी कृति में उल्लेख किया है उसमें महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई पटेल, मंगल पाण्डे, लोकमान्य तिलक, भगत सिंह, स्वामी विवेकानंद, चंद्रशेखर आजाद, पण्डित जवाहरलाल नेहरू, बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय, महर्षि दयानंद सरस्वती, वीर सावरकर, पृथ्वीराज चौहान, महाराणा प्रताप, महाराणा संग्रामसिंह, छत्रपति महाराष्ट्रकेसरीवीर शिवाजी, नाना साहेब पेशवा, तात्या टोपे, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई इत्यादि स्वतंत्रता सेनानियों के विषय में आचार्य ने उल्लेख किया है।

2. कवि परिचय :

आचार्य ओम प्रकाश पाण्डेय का जन्म 1 जनवरी 1948 को उत्तर प्रदेश के बापुरी नामक गाँव जिला बाराबंकी के एक ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनके पिताश्री का नाम केशवराम पाण्डेय था। श्री केशवराम पाण्डेय प्राचीन समय में साहित्य के मूर्धन्य आचार्यों में से एक थे। उनकी माताश्री का नाम कृष्णा कुमारी था। कृष्णा कुमारी एक सच्चरित्र कर्तव्य परायण और पति धर्म परायण सद्गृहणी थी।

3. विस्तृत शोध :

स्वातन्त्र्य-गाथा नामक खण्डकाव्य आचार्य ओम प्रकाश पाण्डेय द्वारा स्वतंत्रता प्राप्ति के निमित्त प्राणों की आहुति देने वाले वीर योद्धाओं की स्मृति में एक कृतज्ञता पूर्ण यज्ञरूपी अमूल्य रत्नग्रन्थ है। इस यज्ञ रूपी ग्रन्थ में उन्होंने पद्य रूपी आहुतियों से उनके वीरतापूर्ण कार्यों को आधुनिक युवा पीढ़ी के सामने आदर्श रूप मे प्रस्तुत किया है। आचार्य ने ग्रन्थ का आरम्भ **"पूर्वजों की गरिमा को जानकर भारत को गुलामी की भावना से मुक्त करना चाहिए"**[1] से कर के भारत वर्ष दास्यभाव से मुक्त होकर पुनः पूर्वजों के गौरव को प्राप्त करें का सन्देश दिया है। कवि कहता है की मात्र सुखानुभूति के लिए ही जीवन जीना कुत्सित कृत्य है। उनके अनुसार राष्ट्र सेवा में समर्पित लोगों का जीवन ही वास्तव में सार्थक जीना है। इस विषय में कवि का वाक् व्यक्तव्य दृष्टव्य है, यथा-

विकास और आनंद से जीवन क्या है?
जीवन उसका है, जिसने अपना जीवन दिया है।
जिन्होंने देश-रक्षा का व्रत स्वीकार किया- पृथ्वी पर कितने लोग हैं ।।[2]

युवाओं का आह्वान करते हुए आचार्य लिखते हैं कि राष्ट्र में यदि परिवर्तन लाने की क्षमता होती है तो वह केवल और केवल युवाशक्ति और युवा जोश में ही होती है। यदि युवावर्ग में इच्छाशक्ति हो तो वह भ्रष्टाचार से संलिप्त राजसत्ताएँ क्षणभर में ही मिट्टी में मिल सकती है। कवि की वाणी का उद्गार श्रोतव्य-दृष्टव्य ही है, यथा-

सिंहासनन्याषु किरीतारत्न- उन्होंने उन्हें लुढ़का दिया और फिर वे ज़मीन पर गिर पड़े।

जब संग्रह क्रांति के हाथ में हो- युवा गुस्से में हैं और झंडे के पास जाते हैं ।।[3]

वनिताओं के साथ जीना तो सिर्फ भोग–विलासपरक जीना है, जिसे हमारे ऋषि –मुनि एवं वेद–वेत्ता निन्दनीय एवं हेय समझते हैं। यदि जीवन को सार्थक बनाना है तो उसे मातृ–भूमि, धर्म-साधना तथा राष्ट्र की समर्चना हेतु समर्पित कर देना चाहिए। राष्ट्र प्रेम से ऊपर और कोई धर्म नहीं है, हमें प्राणों की आहुति देकर भी वसुधा की रक्षा करनी चाहिएं, कवि का भावोद्गार इसप्रकार है-

क्या जवानी है कि एक औरत विलासिता में है प्रियतम की परीक्षा में डूबे?

आप्नोति तद् यौवनमर्थवंतः, जिसने मेरी पूजा की है, वह मातृभूमि अच्छी है ।।[4]

स्वर्ण युग की स्वर्णिम झाँकी को संजाते हुए कवि युवाओं को गुप्तवंश के माध्यम से स्वर्णिम युग के विषय में अवगत करवाते हुए लिखते हैं कि उस समय हमारा सम्पूर्ण राष्ट्र ऐश्वर्य-वैभव, धन–धान्य से धन्य एवं वैभवशाली तथा बहुधा समृद्ध था। उसी समय उन हुणादि आक्रान्ताओं ने लूट लिया, जिन भूखों ने जीवन में कभी भी मोटे अन्न के दर्शन नहीं किए थे, वे हमारे जीवन रक्षण-भरण का झूठा वादा करने लगे। विदेशी आक्रान्तियों की और संकेत-संदेश देते हुए आचार्य कह रहें है, यथा-

अनाज की समृद्धि देखकर वे भूखे थे और हूण और अन्य। उन्होंने देश पर कई तरह से आक्रमण किया और लूटपाट की कदन भोजन के बर्तन भी अब वे नहीं रहे जो पहले हुआ करते थे ।।[5]

इन पद्यों के माध्यम से कवि युवा पीढ़ी को सीख लेने एवं भविष्य में सजग रहने की चेतावनी दी गई है। पृथ्वीराज चौहान के वीरतापूर्ण चरित्र के माध्यम से कवि वर्तमानकालीन नेताओं एवं प्रशासकों को जयचंद सदृश कुपुत्रों से सावधान रहने का संदेश देते हैं और कहते है कि-

और अभागे से पहले वह राजा था तरायण में लड़ते हुए वह हार गया। दोस्त के बड़े धोखे से उन्होंने जीत हासिल की और हार गए ।।[6]

आचार्य सिक्ख धर्म-गुरुओं को राष्ट्रभक्ति विषयक उत्कृष्ट उदाहरण मानते हैं। उनका कथन है कि पौरुष, देशभक्ति तथा स्वधर्म के विषय में किस प्रकार का सुदृढ अनुराग हो यह जानने के लिए हमें सिक्खों के इतिहास का मनन करना चाहिए। आज के समय में जहाँ धर्म को लेकर लोग अलग-अलग बिखरे पड़े है, तथा हर व्यक्ति अपना राष्ट्रवाद बता रहा हैं, वहीँ कवि एकता की और सन्देशदेते दिखाई देते है, और कहते है, यथा-

मर्दानगी क्या है और देश भक्ति क्या है कोई अपने ही धर्म के प्रति कैसे आकर्षित हो सकता है? और यहाँ जो कोई भी जिज्ञासु है उन्हें सिख इतिहास के बारे में सोचने दीजिए ।।[7]

आचार्य प्रवर पाण्डेय का यह मानना है कि भारतीय समाज का वर्णों और जातियों में बंटा होना भारतीय परतन्त्रता का एक प्रमुख कारक रहा है। स्वामी विवेकानंद दीनता, हीनता, प्रमाद, उद्योग-शून्यता तथा समाज को निरर्थक रूढ़ियों में ग्रस्त देखकर अत्यन्त क्षुब्ध थे। ये सब देख कर क्षुब्ध होना सही भी है, क्योकि आज भी कई विषयों पर हमारा समाज वैसा ही है, इस विषय पर कवि के उद्गार इस प्रकार है-

कहीं दुख तो कहीं हीन भावना कभी-कभी लापरवाही या उद्यम की कमी। और निस्सारुधंध की परंपराएं, भेदभाव से देश त्रस्त था ।।[8]

समाज को नारकीय व्यवस्था में धकेलने वाली अश्पृश्यता प्रभृति कुरीतियों के कारण महर्षिदयानन्द अत्यंत खिन्न थे। अश्पृश्यता यह मानव जात का सबसे भयंकर रोग है, स्वामी दयानन्द सरस्वती आजीवन इस बीमारी से लड़ते रहें और इसको खत्म भी किया। यह रोग हमारी एकता को खण्डित करता है, कवि का भावात्मक उद्गार इस प्रकार है-

नैतिकता और कटुता के बिना, वेद विरुद्ध अन्य मतों व धर्मों द्वारा। उनके देश पर लगातार अत्याचार हो रहा है जब दयानन्द यहाँ आये ।।[9]

और छुआछूत जैसी कुरीतियाँ, उन्होंने समाज को उखाड़ना शुरू कर दिया। तस्सर्वत्यसौ च निराकारिष्णु- ऋषि रपापा गंभीर जहर से उदास थे ।।[10]

महात्मा गाँधी के चरित्र वर्णन प्रसंग में कवि लिखता है कि गाँधी जी के अनुसार छुआछूत की भावना समाज में कलंक स्वरूप है। हम सभी एक समाज रूपी परिवार के सदस्य हैं। बन्धु-बांधव हैं। आपस में प्रेम और समानता का व्यवहार होना चाहिए। सहयोग की पारस्परिक भावना प्रकृति प्रदत्त है। गाँधी जी भी जीवन भर कई सामाजिक बुराईयों से लड़ते रहें और उन पर दिग्विजय भी प्राप्त की। कवि इस विषय पर लिखते है, यथा-

अस्पृश्यता एक कलंक है, ये सभी अन्त्यज और अच्छे सम्बन्धी हैं।

एक दूसरे से प्यार करो और समान रहो, और स्वाभाविक रूप से उत्तम सहयोग ।।[11]

कवि वर्तमान युवा पीढ़ी से वर्ण एवं जातिविहीन समाज का आह्वान करता है। उसका कथन है कि भारतीय समाज प्राचीन समय में वर्ण और जातियों में बँटा हुआ था और आज भी है। कवि परतन्त्रता के लिए किसी ओर पर दोषारोपण न करता हुआ कहता है कि जब अपने ही शरीर में विकृतियों के कारण विद्यमान हो तो शत्रुओं का क्या दोष है? अतः भविष्य में हम इन विकृतियों के निवारण में अपना सहयोग दें। वर्ण और जाति आज के बिखरते समाज की सबसे भयंकर समस्या हैं। जब हम ही एक नहीं होंगे तो एक देश एक राष्ट्र का नारा कैसे दे सकते हैं, एकता के लिए विविधता का एकत्व होना बहुधा आवश्यक है, कवि का व्यक्तव्य इस प्रकार है-

वर्ण, जाति आदि में विभाजित, समाज था और भारतीय था ।

शरीर में शत्रुओं का क्या दोष, विकार का कारण वास्तव में मौजूद है ।।[12]

भाग्यवाद की परम्परा पर भी कवि युवाओं को सचेत रहने का संदेश देते हैं। उनका कथन है कि जिस राष्ट्र में पूर्व जन्मों के कर्म ही निर्णायक समझे जाते हैं तथा कर्मयोग को ठुकरा दिया जाता है उस राष्ट्र का अस्तित्व शीघ्र ही समाप्त हो जाता है। भारतीय सनातन संस्कृति चरैयिवेति चरैयिवेति सिद्धांत की प्रबल समर्थक रही है अतः जीवन में कर्म का होना अति आवश्यक है। कर्म प्रबलता पर कवि ने अपनी वाणी का द्वार इस प्रकार प्रकट किया है-

प्राक्जन्मकर्माणि भवन्ति यत्र, उन्हें लोगों द्वारा निर्णायक रूप से नष्ट कर दिया गया है।

फिर वह तेजी से रसातल के तल में चला जाता है राष्ट्र की हत्या होती है और जहां कर्म योग होता है ।।[13]

यहाँ कवि भाग्यवादी को भी परतंत्रता में एक कारण मानता है। स्वतन्त्रता-योजना से पूर्व की स्थिति को ध्यान में रखते हुए कवि कहता है कि ऐसा कैसे हो सकता है कि इतने वृहद् राष्ट्र में गुलामी की स्थिति को देखकर आरम्भ के समय में समाज के विशिष्ट एवं प्रबुद्ध

वर्ग में कोई भी प्रतिक्रिया नहीं हुई। जागरूकता विषयक कार्यक्रमों का आयोजन क्यों नहीं किया गया? लोग यह सोचकर हाथ पर हाथ रखे बैठे रहे कि प्रारब्ध को कौन बदल सकता है? इस विषय पर कवि वाणी दृष्टव्य है, यथा-

फिर भी, एक विशिष्ट श्रेणी में, यह प्रतिक्रिया कोई नयी प्रतिक्रिया नहीं है ।

आरंभ-कारण को उलटा नहीं किया जाना है, लोग उसके कंधे पर हाथ रख कर बैठ गये ।।[14]

भाग्यवाद के अपप्रभाव से ही यह राष्ट्र पतन की ओर अग्रसर हुआ। भाग्यवाद केवल न हमें आहत करता है, अपितु हमारे पुरुषार्थ की भावना को भी नष्ट कर देता है। यहाँ कवि आधुनिक युवा पीढ़ी को भाग्यवाद को छोड़कर कर्मपथ पर अग्रसर होने का संदेश देते हैं, यथा-

लानत है ! सौभाग्य से, कियान, जिसकी पराजय से उसका पतन हुआ है।

प्रज्ञा हता दैवविचारकैस्तु, हमारा स्वार्थ-साधना नष्ट हो गया है ।।[15]

लोकमान्य बालगंगाधर तिलक के जीवन के माध्यम से आचार्य पाण्डेय समाचार- पत्र सम्पादकों एवं वरिष्ठ विचारकों के मन को उद्वेलित करते हैं। तिलक ने कांग्रेस के अध्यक्ष पद पर कार्य करते हुए अनेक नौजवानों को मातृभूमि की स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए प्रेरित किया। स्वराज्य के संदेश प्रसारण के लिए उन्होंने 'केसरी' नामक मराठी समाचार- पत्र की शुरुआत की। केसरी में छपे 'देश का दुर्भाग्य' नामक लेख के कारण ही उन्हें 6 वर्ष की कठोर कारावास के अंतर्गत बर्मा के मांडले जेल में बंद कर दिया गया था। इस विषय पर कवि का कथन इस प्रकार है-

और अच्छी तरह से लिपटे कागज पर भयानक शिलालेखों के साथ, संपादक तिलकोनिरुद्ध हैं। प्रकाश्यमनितमानेन कारा- गीता में ।।[16]

और राष्ट्रपति पद पर आने के बाद, जिसके द्वारा कई, उग्र युवाओं से प्रेरित. स्वराज्य संदेश प्रसारित करने हेतु- मुवा वै "केसरी" अखबार ।।[17]

वर्तमानकालिक सम्पादकों, कवियों एवं विचार-वेत्ताओं से कवि यही आशा करता है कि वे भी नवयुवकों को अपनी लेखनी के प्रताप से आंदोलित करें। प्रशासन की कुनीतियों, भ्रष्टाचार, समाज में फैली कुरीतिओं, अंधविश्वास तथा नशे के विरुद्ध अपनी आवाज बुलंद करें। स्वार्थ-परक प्रवृत्ति का त्याग करें। बंकिमचंद्रचटोपाध्याय ने अपनी कलम के दम पर ही (आनन्दमठ) असंख्य युवाओं को मातृभूमि के लिए प्राणों को न्योछावर करने हेतु प्रेरित किया। इस पर कवि के मन का भाव इसप्रकार हैं-

सानंदमानंदमथे ववंडे, वह धरती में क्रांति का मंत्र देखता है ।

असंख्यायुन्स्तु समदिदेशे, वह बंकिम अपने प्राण त्याग दे ।।[18]

महात्मा गांधी के जीवन चरित्र से हमें आत्मबल से लड़ने की सीख मिलती है। उपनिषद् की "अहिंसा परमो धर्मः" इस उक्ति को चरितार्थ करते हुए वे कहते है की अहिंसा से मदोन्मत्त और सुशक्ति-सम्पन उग्र शत्रु को भी पराजित किया जा सकता है। कवि वाक् उद्गार यथा-

क्षमेन सत्येन च कार्यसिद्धि, भवेत् गुणस्साधु निजावलम्बः ।

यनिर्भरस्त्वात्मनि सन्ततन्तद, राष्ट्र समुत्थानदिशाभिकल्पी ।।[19]

उनका कहना था कि विदेशी वस्तुएँ कितनी भी सुंदर क्यों न हो उनका परित्याग ही श्रेयस्कर है। गाँधी जी के अनुसार हमें उद्योग करने तथा सत्यनिष्ठ रहने से ही कार्य मे पर्याप्त सफलता मिलती है। स्वालम्बन सर्वश्रेष्ठ गुण है। राष्ट्र में जो व्यक्ति पूरी तरह से आत्म-निर्भर होता है, वही राष्ट्रीय विकास में भी सहायक हो पाता हैं। आचार्य पाण्डेय कहते- हैं कि गाँधी के गुण आज भी गृहणीय हैं। यथा दीन–दुर्बलों के प्रति दया की भावना, अपरिग्रह, संयम, सत्यनिष्ठ, क्षमा, दया और सदाचार– परायणता।

आज भी है उस बेचारी दया का एहसास, संयम और सत्य में अपरिग्रहः।

उनके स्वीकार्य गुण क्षमा और दया हैं, सदाचार ।।[20]

अंत में कवि का यही कहना है कि विदेशियों का शासन कितना भी श्रेष्ठ क्यों न हो उसका बहिष्कार करना चाहिए। उसकी तुलना में अपनी राज्य- व्यवस्था कुछ हीन भी क्यों न हो फिर भी स्वदेश में ग्राह्य है। जीवन और आजादी का गान करते हुए कवि स्वराष्ट्र की व स्वराज्य की स्वतंत्रता का उद्गार प्रकट किया है, यथा-

विदेशी शासन बेहतर हो, किसी तरह नहीं लेकिन स्वीकार्य है ।

वह राज अपने से भी ज्यादा गरीब है राज्य अपने ही देश में श्रेष्ठ है ।।[21]

इस भारत-भूमि पर युवाओं को स्वार्थ-साधना का परित्याग कर राष्ट्र की उन्नति में अपना उत्कृष्ट योगदान देना चाहिए।

4. गवेषणात्मक निष्कर्ष : "श्रमेण सत्येन च कार्यसिद्धिर्भवेद्"[22] अर्थात् श्रम और सत्य से ही कार्य की सिद्धि होती है। यह श्रम-सत्य वीरता के अभाव में उत्पन्न नहीं हो सकता है। अधीनता का भाव ही स्वतंत्रता को बाधित करता है। वीरता आत्मा का धर्म है, यह हर एक व्यक्ति में विद्यमान है, बस उसको उद्दीप्त करने की आवश्यकता है और जीवित रखने की भी। इसप्रकार की वीरतापूर्ण गाथाओं के माध्यम से ही वीरता पुनर्जीवित हो उठती है और परतन्त्ररूपी बेड़ियों से हमारी रक्षा करती है।

आजादी के नाम पर आज हर जगह स्वच्छंदता नजर आती है। ऐसे राजा हैं जो नेता हैं, और उनका लोगों पर कोई नियंत्रण नहीं है।[23]

अन्य स्वतंत्रता सेनानी भी हैं, जिनमें से कुछ अभी भी मौजूद हैं ।[24]

प्रश्न मेरा अभी भी वहीँ हैं क्या हम गुलामी की और ही बड़ रहें हैं? स्वतन्त्रता मेरा अधिकार हैं, इसकी रक्षा करना मेरी जरूरत हैं, मानव हित एवं राष्ट्र हित ही सर्वोपरि है। मानव मात्र को इसके उत्सव में बहना नहीं है।

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची :

ओम प्रकाश पांडे : रसप्रिया विभावनम् (संस्कृत एवं हिन्दी अनुवाद), नाग पब्लिशर्स, दिल्ली.

[1] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 01
[2] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 02
[3] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 03
[4] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 04
[5] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 05
[6] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या10
[7] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 19
[8] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 81
[9] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 84
[10] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 85
[11] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 106
[12] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या23
[13] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 29
[14] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 27
[15] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 28
[16] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 71
[17] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 72
[18] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 75
[19] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 105
[20] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 105
[21] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 86

[22] रसप्रिया-विभावनम्, स्वातन्त्र्य-गाथा, पृष्ठ संख्या 105
[23] राष्ट्र-स्मृतिः-प्रस्तावना-शतकम्-22
[24] राष्ट्र-स्मृतिः-प्रस्तावना-शतकम्-35